# षष्ठः पाठः - सौहार्दं प्रकृतेः शोभा (नाटक)

## 1. पाठ परिचय

यह पाठ एक संवादात्मक नाटक है जिसमें पशु-पक्षियों के बीच 'वन का राजा' (King of the Forest) बनने की होड़ मची है। अंत में यह संदेश दिया गया है कि 'प्रकृति में सभी प्राणियों का अपना-अपना महत्त्व है और आपसी प्रेम ही प्रकृति की असली सुंदरता है।'

## 2. कथा प्रसंग

**शेर की दुर्दशा:** शेर सो रहा है, तभी कुछ बंदर आकर उसकी पूंछ खींचते हैं और पेड़ पर चढ़ जाते हैं। शेर क्रोधित होकर दहाड़ता है, लेकिन बंदर उस पर हँसते हैं और कहते हैं कि तुम राजा बनने के लायक नहीं हो जो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता।

**विभिन्न जीवों का दावा:**

- **कौआ:** कौआ कहता है कि मैं सबसे चतुर हूँ। 'काकचेष्टा' (कौए जैसा ध्यान) वाला छात्र ही आदर्श माना जाता है।
- **कोयल:** कोयल कौए का मज़ाक उड़ाती है कि तुम तो काले हो। वसंत आने पर पता चलता है कि कौन कोयल है और कौन कौआ।
- **हाथी:** हाथी कहता है कि मैं सबसे बलवान हूँ और अपने विशाल शरीर से किसी को भी मार सकता हूँ, इसलिए मुझे राजा बनना चाहिए।
- **मोर:** मोर अपनी सुंदरता का बखान करते हुए कहता है कि मेरी कला और नृत्य के सामने कोई नहीं टिक सकता।

**प्रकृति माता का संदेश:** तभी 'प्रकृति माता' प्रकट होती हैं। वे सभी को डाँटते हुए कहती हैं, "तुम सब मेरी संतान हो। आपस में क्यों लड़ रहे हो? तुम सभी अपने-अपने स्थान पर और अपने-अपने समय पर उपयोगी हो। अतः लड़ना छोड़कर मिल-जुल कर रहो, क्योंकि प्राणियों का प्रेम और सहयोग ही प्रकृति की शोभा है।"